

سُورَةُ يُونُسَ

Surah 10 — Yunus (Jonas) • Meccan • 109 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

अलिफ़ लाम रा ये आयतें उस किताब की हैं जो अज़सरतापा (सर से पैर तक) हिकमत से मलूउ (भरी) है

2

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ ۝ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ
ءَامَنُوا ۝ أَنْ لَهُمْ قَدَمٌ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ ۝ مُّبِينٌ

क्या लोगों को इस बात से बड़ा ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं लोगों में से एक आदमी के पास वही भेजी कि (बे ईमान) लोगों को डराओ और ईमानदारों को इसकी खुश ख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में बुलन्द दर्जे है (मगर) कुफ़ार (उन आयतों को सुनकर) कहने लगे कि ये (शख्स तो यक़ीनन सरीही जादूगर) है

3

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۝ ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۝ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ ۝ بَعْدَ إِذْنِهِ ۝ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ ۝ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

इसमें तो शक़ ही नहीं कि तुमरा परवरदिगार वही खुदा है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श को बुलन्द किया वही हर काम का इन्तज़ाम करता है (उसके सामने) कोई (किसी का) सिफारिशी नहीं (हो सकता) मगर उसकी इज़ाज़त के बाद वही खुदा तो तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो तो क्या तुम अब भी ग़ौर नहीं करते

4

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ إِنَّهُ ۚ يَبْدُوهُ ۚ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ لِيَجْزِيَ
 الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ ۚ مِّنْ
 حَمِيمٍ ۚ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ

तुम सबको (आखिर) उसी की तरफ लौटना है खुदा का वायदा सच्चा है वही यकीनन मखलूक को पहली मरतबा पैदा करता है फिर (मरने के बाद) वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्चे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए (खैर) अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ़ एख्तियार किया उन के लिए उनके कुफ़ की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा

5

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً ۚ وَالْقَمَرَ نُورًا ۚ وَقَدَرَهُ ۚ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا ۚ عَدَدَ
 السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
 يَعْلَمُونَ

वही वह (खुदाए कादिर) है जिसने आफ़ताब को चमकदार और महताब को रौशन बनाया और उसकी मंज़िलें मुकर्रर की ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो खुदा ने उसे हिकमत व मसलहत से बनाया है वह (अपनी) आयतों का वाक्फ़िकार लोगों के लिए तफ़सीलदार बयान करता है

6

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ
 يَتَّقُونَ

इसमें ज़रा भी शक़ नहीं कि रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ खुदा ने आसमानों और ज़मीन में बनाया है (उसमें) परहेज़गारों के वास्ते बहुतेरी निशानियाँ हैं

7

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا ۚ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا ۚ بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ
 ءَايَاتِنَا غَفُلُونَ

इसमें भी शक़ नहीं कि जिन लोगों को (क़यामत में) हमारी (बारगाह की) हुज़ूरी का ठिकाना नहीं और दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी से निहाल हो गए और उसी पर चैन से बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं

8

أَوْ لَكَ مَأْوَاهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا؟ يَكْسِبُونَ

यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना उनकी करतूत की बदौलत जहन्नुम है

9

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें उनका परवरदिगार उनके ईमान के सबब से मंज़िल मकसूद तक पहुँचा देगा कि आराम व आसाइश के बाग़ों में (रहेगें) और उन के नीचे नहरें जारी होगी

10

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ؟ وَءَاخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ

उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ खुदा तू पाक व पाकीज़ा है और उनमें उनकी बाहमी (आपसी) खैरसलाही (मुलाक्रात) सलाम से होगी और उनका आखिरी कौल ये होगा कि सब तारीफ़ खुदा ही को सज़ावार है जो सारे जहाँ का पालने वाला है

11

؟ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجْلُهُمْ ؟ فَنَذَرُ
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ

और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिए जल्दी कर बैठे हैं उसी तरह अगर खुदा उनकी शरारतों की सज़ा में बुराई में जल्दी कर बैठता है तो उनकी मौत उनके पास कब की आ चुकी होती मगर हम तो उन लोगों को जिन्हें (मरने के बाद) हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं छोड़ देते हैं कि वह अपनी सरकशी में आप सरगिरदा रहें

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ بِهِ ۖ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
ضُرَّهُ ۚ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ ۚ مَّسَّهُ ۚ ۚ كَذَلِكَ زِينٌ لِّلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا ۚ
يَعْمَلُونَ

और इन्सान को जब कोई नुकसान छू भी गया तो अपने पहलू पर (लेटा हो) या बैठा हो या खड़ा (गरज हर हालत में) हम को पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो ऐसा खिसक जाता है जैसे उसने तकलीफ के (दफा करने के) लिए जो उसको पहुँचती थी हमको पुकारा ही न था जो लोग ज्यादाती करते हैं उनकी कारस्तानियाँ यूँ ही उन्हें अच्छी कर दिखाई गई हैं

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونََ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۚ ۚ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا
كَانُوا ۚ لِيُؤْمِنُوا ۚ ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ

और तुमसे पहली उम्मत वालों को जब उन्होंने शरारत की तो हम ने उन्हें ज़रूर हलाक कर डाला हालाँकि उनके (वक्त के) रसूल वाजे ए व रौशन मोज़िज़ात लेकर आ चुके थे और वह लोग ईमान (न लाना था) न लाए हम गुनेहगार लोगों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن ۚ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ

फिर हमने उनके बाद तुमको ज़मीन में (उनका) जानशीन बनाया ताकि हम (भी) देखें कि तुम किस तरह काम करते हो

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ ۚ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُمْتُ بِقُرْءَانٍ غَيْرِ هَذَا
أَوْ بَدِّلْهُ ۚ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَن أُبَدِّلَهُ ۚ ۚ مِن تِلْقَائِي نَفْسِي ۚ ۚ إِن أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ ۚ ۚ إِنِّي أَخَافُ إِن عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَّوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

और जब उन लोगों के सामने हमारी रौशन आयते पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों को (मरने के बाद) हमारी हुजूरी का खटका नहीं है वह कहते हैं कि हमारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा (कुरान लाओ या उसका रद्दो बदल कर डालो (ऐ रसूल तुम कह दो कि मुझे ये एख्तेयार नहीं कि मैं उसे अपने जी से बदल डालूँ मैं तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरी तरफ वही की गई है मैं तो अगर अपने परवरदिगार की नाफरमानी करू तो बड़े (कठिन) दिन के अज़ाब से डरता हूँ

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ ۚ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۚ ۚ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا ۚ ا مِّن قَبْلِهِ ۚ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

(ऐ रसूल) कह दो कि खुदा चाहता तो मैं न तुम्हारे सामने इसको पढ़ता और न वह तुम्हें इससे आगाह करता क्योंकि मैं तो (आखिर) तुमने इससे पहले मुद्दतों रह चुका हूँ (और कभी 'वही' का नाम भी न लिया)

فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते तो जो शख्स खुदा पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़ कर और ज़ालिम कौन होगा इसमें शक नहीं कि (ऐसे) गुनाहगार कामयाब नहीं हुआ करते

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ۚ ۚ قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ ۚ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

या लोग खुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते हैं जो न उनको नुकसान ही पहुँचा सकती है न नफा और कहते हैं कि खुदा के यहाँ यही लोग हमारे सिफारिशी होंगे (ऐ रसूल) तुम (इनसे) कहो तो क्या तुम खुदा को ऐसी चीज़ की खबर देते हो जिसको वह न तो आसमानों में (कहीं) पाता है और न ज़मीन में ये लोग जिस चीज़ को उसका शरीक बनाते हैं

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً ۚ ۚ وَاحِدَةً ۚ ۚ فَأَخْتَلَفُوا ۚ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ ۚ ۚ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

उससे वह पाक साफ और बरतर है और सब लोग तो (पहले) एक ही उम्मत थे और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात (क्रियामत का वायदा) पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख्तिलाफ कर रहे हैं उसका फैसला उनके दरमियान (कब न कब) कर दिया गया होता

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغِيبُ لِلَّهِ فَأَنْتَظِرُونَ ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

और कहते हैं कि उस पैग़म्बर पर कोई मोजिज़ा (हमारी ख्वाहिश के मुवाफ़िक़) क्यों नहीं नाज़िल किया गया तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ग़ैब (दानी) तो सिर्फ़ खुदा के वास्ते खास है तो तुम भी इन्तज़ार करो और तुम्हारे साथ मैं (भी) यक़ीनन इन्तज़ार करने वालों में हूँ

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً ۖ مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ ۚ فَيَـَٔيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ

और लोगों को जो तकलीफ़ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाँका चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तद्दीर में खुदा सब से ज्यादा तेज़ है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) लिखते जाते हैं

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ ۖ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ ۖ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ ۖ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۖ دَعَوُا ۖ اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ ۖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ

वह वही खुदा है जो तुम्हें खुशकी और दरिया में सैर कराता फिरता है यहाँ तक कि जब (कभी) तुम कश्तियों पर सवार होते हो और वह उन लोगों को बाद मुवाफ़िक़ (हवा के धारे) की मदद से लेकर चली और लोग उस (की रफ्तार) से खुश हुए (यकायक) कश्ती पर हवा का एक झोंका आ पड़ा और (आना था कि) हर तरफ़ से उस पर लहरें (बढ़ी चली) आ रही हैं और उन लोगों ने समझ लिया कि अब घिर गए (और जान न बचेगी) तब अपने अक्कीदे को उसके वास्ते निरा खरा करके खुदा से दुआएँ माग़ने लगते हैं कि (खुदाया) अगर तूने इस (मुसीबत) से हमें नजात दी तो हम ज़रूर बड़े शुक्र गुज़ार होंगे

فَلَمَّا أَنْجَلَهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ ۚ مَتَّعَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

फिर जब खुदा ने उन्हें नजात दी तो वह लोग ज़मीन पर (कदम रखते ही) फौरन नाहक सरकशी करने लगते हैं (ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी का वबाल) तो तुम्हारी ही जान पर है - (ये भी) दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी का फायदा है फिर आखिर हमारी (ही) तरफ तुमको लौटकर आना है तो (उस वक्त) हम तुमको जो कुछ (दुनिया में) करते थे बता देगे

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنْ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ ۚ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا ۚ فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا ۚ كَأَن لَّمْ تَغْنَبِ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

दुनियावी ज़िन्दगी की मसल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर ज़मीन के साग पात जिसको लोग और चौपाए खा जाते हैं (उसके साथ मिल जुलकर निकले यहाँ तक कि जब ज़मीन ने (फसल की चीज़ों से) अपना बनाओ सिंगार कर लिया और (हर तरह) आरास्ता हो गई और खेत वालों ने समझ लिया कि अब वह उस पर यक्रीनन काबू पा गए (जब चाहेंगे काट लेगे) यकायक हमारा हुक्म व अज़ाब रात या दिन को आ पहुँचा तो हमने उस खेत को ऐसा साफ कटा हुआ बना दिया कि गोया कुल उसमें कुछ था ही नहीं जो लोग ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके वास्ते हम आयतों को यूँ तफसीलदार बयान करते हैं

وَاللَّهُ يَدْعُوهُ ۚ إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ ۚ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और खुदा तो आराम के घर (बेहशत) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है

ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۚ الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۚ ۚ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ ۚ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ ۚ أُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

जिन लोगों ने दुनिया में भलाई की उनके लिए (आखिरत में भी) भलाई है (बल्कि) और कुछ बढ़कर और न (गुनेहगारों की तरह) उनके चेहरों पर कालिक लगी हुई होगी और न (उन्हें) ज़िल्लत होगी यही लोग जन्नती हैं कि उसमें हमेशा रहा सहा करेंगे

وَالَّذِينَ كَسَبُوا ۚ السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ ۚ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ۚ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ
 مِنْ عَاصِمٍ ۚ ۚ كَانَمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا ۚ ۚ مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ ۚ أُولَٰئِكَ
 أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं तो गुनाह की सज़ा उसके बराबर है और उन पर रुसवाई छाई होगी खुदा (के अज़ाब) से उनका कोई बचाने वाला न होगा (उनके मुह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरे यबों यज़ूर (अंधेरी रात) के टुकड़े से ढक दिए गए हैं यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये उसमें हमेशा रहेंगे

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ ۚ ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ ۚ مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۚ ۚ
 فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۚ ۚ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ

(ऐ रसूल उस दिन से डराओ) जिस दिन सब को इकट्ठा करेंगे-फिर मुशरेकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे (बनाए हुए खुदा के) शरीक ज़रा अपनी जगह ठहरो फिर हम वाहम उनमें फूट डाल देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे कि तुम तो हमारी परसतिश करते न थे

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ ۚ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِلِينَ

तो (अब) हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते खुदा ही काफी है हम को तुम्हारी परसतिश की खबर ही न थी

هُنَالِكَ تَبْلُوا ۚ ۚ كُلُّ نَفْسٍ ۚ ۚ مَا أَسْلَفَتْ ۚ ۚ وَرُدُّوْا ۚ ۚ إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۚ ۚ وَضَلَّ
 عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۚ ۚ يَفْتَرُونَ

(गरज़) वहाँ हर शख्स जो कुछ जिसने पहले (दुनिया में) किया है जाँच लेगा और वह सब के सब अपने सच्चे मालिक खुदा की बारगाह में लौटकर लाए जाएँगे और (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़िया (झूठी बातें) करते थे सब उनके पास से चल चंपत हो जाएँगे

31

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ؟ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ؟ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ

ऐ रसूल तुम उने ज़रा पूछो तो कि तुम्हें आसमान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या (तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखों का कौन मालिक है और कौन शरूख़ मुर्दे से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को निकालता है और हर अम्र (काम) का बन्दोबस्त कौन करता है तो फौरन बोल उठेंगे कि खुदा (ऐ रसूल) तुम कहो तो क्या तुम इस पर भी (उससे) नहीं डरते हो

32

فَذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ

फिर वही खुदा तो तुम्हारा सच्चा खब है फिर हक़ बात के बाद गुमराही के सिवा और क्या है फिर तुम कहाँ फिरे चले जा रहे हो

33

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا ۖ أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

ये तुम्हारे परवरदिगार की बात बदचलन लोगों पर साबित होकर रही कि ये लोग हरगिज़ ईमान न लाएँगे।

34

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُو؟ ۝ اَلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ؟ ۝ قُلِ اللّٰهُ يَبْدُو؟ ۝ اَلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ؟ ۝ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ

(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि तुम ने जिन लोगों को (खुदा का) शरीक बनाया है कोई भी ऐसा है जो मखलूक़ात को पहली बार पैदा करे फिर उन को (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करे (तो क्या जवाब देंगे) तुम्ही कहो कि खुदा ही पहले भी पैदा करता है फिर वही दोबारा ज़िन्दा करता है तो किधर तुम उल्टे जा रहे हो

35

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۚ أَفَمَنْ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ ۚ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ

(ऐ रसूल उनसे) कहो तो कि तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तुम्हें (दीन) हक की राह दिखा सके तुम ही कह दो कि (खुदा) दीन की राह दिखाता है तो जो तुम्हे दीने हक की राह दिखाता है क्या वह ज्यादा हकदार है कि उसके हुक्म की पैरवी की जाए या वह शरूख जो (दूसरे) की हिदायत तो दरकिनार खुद ही जब तक दूसरा उसको राह न दिखाए राह नहीं देख पाता तो तुम लोगों को क्या हो गया है

وَمَا يَتَّبِعْ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌۢ بِمَا يَفْعَلُونَ

तुम कैसे हुक्म लगाते हो और उनमें के अक्सर तो बस अपने गुमान पर चलते हैं (हालाँकि) गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में हरगिज़ कुछ भी काम नहीं आ सकता बेशक वह लोग जो कुछ (भी) कर रहे हैं खुदा उसे ख़ूब जानता है

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और ये कुरान ऐसा नहीं कि खुदा के सिवा कोई और अपनी तरफ से झूठ मूठ बना डाले बल्कि (ये तो) जो (किताबें) पहले की उसके सामने मौजूद हैं उसकी तसदीक और (उन) किताबों की तफ़सील है उसमें कुछ भी शक़ नहीं कि ये सारे जहाँन के परवरदिगार की तरफ से है

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا ۚ مَنْ أَسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

क्या ये लोग कहते हैं कि इसको रसूल ने खुद झूठ मूठ बना लिया है (ऐ रसूल) तुम कहो कि (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (भला) एक ही सूरा उसके बराबर का बना लाओ और खुदा के सिवा जिसको तुम्हें (मदद के वास्ते) बुलाते बन पड़े बुला लो

بَلْ كَذَّبُوا ۚ بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ ۚ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الظَّالِمِينَ

(ये लोग लाते तो क्या) बल्कि (उलटे) जिसके जानने पर उनका हाथ न पहुँचा हो लगे उसको झुठलाने हालाँकि अभी तक उनके जेहन में उसके मायने नहीं आए इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे-तब ज़रा ग़ौर तो करो कि (उन) ज़ालिमों का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ

और उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि इस कुरान पर आइन्दा ईमान लाएंगे और बाज़ ऐसे हैं जो ईमान लाएंगे ही नहीं

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلٍ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا ۖ بَرِيءٌ ۖ مِمَّا تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार फसादियों को खूब जानता है और अगर वह तुम्हे झुठलाए तो तुम कह दो कि हमारे लिए हमारी कार गुजारी है और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारस्तानी जो कुछ मैं करता हूँ उसके तुम ज़िम्मेदार नहीं और जो कुछ तुम करते हो उससे मैं बरी हूँ

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا ۖ لَا يَعْقِلُونَ

और उनमें से बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी ज़बानों की तरफ कान लगाए रहते हैं तो (क्या) वह तुम्हारी सुन लेगें हरगिज़ नहीं अगरचे वह कुछ समझ भी न सकते हो

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْىَ وَلَوْ كَانُوا ۖ لَا يُبْصِرُونَ

तुम कही बहरों को कुछ सुना सकते हो और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ (टकटकी बाँधे) देखते हैं तो (क्या वह ईमान लाएँगे हरगिज़ नहीं) अगरचे उन्हें कुछ न सूझता हो तो तुम अन्धे को राहे रास्त दिखा दोगे

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا ۖ وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

खुदा तो हरगिज़ लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता मगर लोग खुद अपने ऊपर (अपनी करतूत से) जुल्म किया करते हैं

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا ۖ إِلَّا سَاعَةً ۖ مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۖ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا ۖ مُهْتَدِينَ

और जिस दिन खुदा इन लोगों को (अपनी बारगाह में) जमा करेगा तो गोया ये लोग (समझेगें कि दुनिया में) बस घड़ी दिन भर ठहरे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने खुदा की बारगाह में हाज़िर होने को झुठलाया वह ज़रूर घाटे में हैं और हिदायत याफता न थे

وَأَمَّا نُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا يَفْعُلُونَ

ऐ रसूल हम जिस जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा कर चुके हैं उनमें से बाज़ ख्वाहा तुम्हें दिखा दें या तुमको (पहले ही दुनिया से) उठा ले फिर (आखिर) तो उन सबको हमारी तरफ लौटना ही है फिर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं खुदा तो उस पर गवाह ही है

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और हर उम्मत का खास (एक) एक रसूल हुआ है फिर जब उनका रसूल (हमारी बारगाह में) आएगा तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़रा बराबर जुल्म न किया जाएगा

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

ये लोग कहा करते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आखिर) ये (अज़ाब का वायदा) कब पूरा होगा

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا ۖ وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتُخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं खुद अपने वास्ते नुकसान पर कादिर हूँ न नफा पर मगर जो खुदा चाहे हर उम्मत (के रहने) का (उसके इल्म में) एक वक्त मुक़र्रर है-जब उन का वक्त आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे हट सकती है और न आगे बढ़ सकते हैं

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ ۖ بَيَّتًا أَوْ نَهَارًا ۖ مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम समझते हो कि अगर उसका अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाए तो (तुम क्या करोगे) फिर गुनाहगार लोग आखिर काहे की जल्दी मचा रहे हैं

أَنْتُمْ إِذَا مَا وَقَعَ ءَامَنْتُمْ بِهِ ۖ ءَاَلْنِ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ

फिर क्या जब (तुम पर) आ चुकेगा तब उस पर ईमान लाओगे (आहा) क्या अब (ईमान लाए) हालाँकि तुम तो इसकी जल्दी मचाया करते थे

52

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ ذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ

फिर (क़यामत के दिन) ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि (अब हमेशा के अज़ाब के मजे चखो (दुनिया में) जैसी तुम्हारी करतूतें तुम्हें (आखिरत में) वैसा ही बदला दिया जाएगा

53

ۚ وَيَسْتَنْدِ بِوَنِكَ أَحَقُّ هُوَ ۚ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ ۚ لَحَقُّ ۚ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ

(ऐ रसूल) तुम से लोग पूछते हैं कि क्या (जो कुछ तुम कहते हो) वह सब ठीक है तुम कह दो (हाँ) अपने परवरदिगार की कसम ठीक है और तुम (खुदा को) हरा नहीं सकते

54

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ۚ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۚ وَأَسْرُوا ۚ النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا ۚ الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और (दुनिया में) जिस जिसने (हमारी नाफरमानी कर के) जुल्म किया है (क़यामत के दिन) अगर तमाम खज़ाने जो ज़मीन में हैं उसे मिल जाएँ तो अपने गुनाह के बदले ज़रूर फ़िदया दे निकले और जब वह लोग अज़ाब को देखेंगे तो इज़हारे निदामत करेंगे (शर्मिदा होंगे) और उनमें बाहम इन्साफ़ के साथ हुक्म दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा (बराबर जुल्म न किया जाएगा

55

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

आगाह रहो कि जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही का है आगाह रहे कि खुदा का वायदा यक़ीनी ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं

56

هُوَ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और तुम सब के सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे

57

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ ۚ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى ۚ وَرَحْمَةٌ ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत (किताबे खुदा आ चुकी और जो (मरज़ शिर्क वगैरह) दिल में हैं उनकी दवा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ ۖ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (ये कुरान) खुदा के फज़ल व करम और उसकी रहमत से तुमको मिला है (ही) तो उन लोगों को इस पर खुश होना चाहिए

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ ۖ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا ۖ وَحَلَالًا ۖ قُلْ ءَاللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۚ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ

और जो कुछ वह जमा कर रहे हैं उससे कहीं बेहतर है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम्हारा क्या ख्याल है कि खुदा ने तुम पर रोज़ी नाज़िल की तो अब उसमें से बाज़ को हुराम बाज़ को हलाल बनाने लगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या खुदा ने तुम्हें इजाज़त दी है या तुम खुदा पर बोहतान बाँधते हो

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ

और जो लोग खुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा करते हैं रोजे क़यामत का क्या ख्याल करते हैं उसमें शक़ नहीं कि खुदा तो लोगों पर बड़ा फज़ल व (करम) है मगर उनमें से बहुतेरे शुक्र गुज़ार नहीं हैं

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ ۖ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْءَانٍ ۖ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ ۖ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

(और ऐ रसूल) तुम (चाहे) किसी हाल में हो और कुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और (लोगों) तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम (हम सर वक़्त) जब तुम उस काम में मशगूल होते हो तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़रूर भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़रूर से छोटोटी है और न उससे बड़ी चीज़ मगर वह रौशन किताब लौहे महफूज़ में ज़रूर है

إِنَّا إِنَّا أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

आगाह रहो इसमें शक़ नहीं कि दोस्ताने खुदा पर (क़यामत में) न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आजुर्दा (ग़मगीन) खातिर होंगे

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَكَانُوا ۙ يَتَّقُونَ

ये वह लोग हैं जो ईमान लाए और (खुदा से) डरते थे

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

उन्हीं लोगों के वास्ते दीन की ज़िन्दगी में भी और आखिरत में (भी) खुशखबरी है खुदा की बातों में अदल बदल नहीं हुआ करता यही तो बड़ी कामयाबी है

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और (ऐ रसूल) उन (कुफ़ार) की बातों का तुम रंज न किया करो इसमें तो शक़ नहीं कि सारी इज्जत तो सिर्फ़ खुदा ही के लिए है वही सबकी सुनता जानता है

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ

आगाह रहो इसमें शक़ नहीं कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही के लिए है और जो लोग खुदा को छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो (खुदा के फ़र्जी) शरीकों की राह पर भी नहीं चलते बल्कि वह तो सिर्फ़ अपनी अटकल पर चलते हैं और वह सिर्फ़ वहमी और ख्याली बातें किया करते हैं

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا ۚ فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ

वह वही (खुदाए क़ादिर तवाना) है जिसने तुम्हारे नफा के वास्ते रात को बनाया ताकि तुम इसमें चैन करो और दिन को (बनाया) कि उसकी रौशनी में देखो भालो उसमें शक़ नहीं जो लोग सुन लेते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत की बहुतेरी निशानियाँ हैं)

قَالُوا ۖ أَتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ ۙ هُوَ الْغَنِيُّ ۚ لَهُ ۚ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بِهٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

लोगों ने तो कह दिया कि खुदा ने बेटा बना लिया-ये महज़ लगों वह तमाम नकायस से पाक व पाकीज़ा वह (हर तरह) से बेपरवाह हैं व जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसी का है (जो कुछ) तुम कहते हो (उसकी कोई दलील तो तुम्हारे पास है नहीं क्या तुम खुदा पर) (यू ही) बे जाने बूझे झूठ बोला करते हो

قُلْ إِنِّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ

ऐ रसूल तुम कह दो कि बेशक जो लोग झूठ मूठ खुदा पर बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होंगे

مَتَّعٌ ۚ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ

(ये) दुनिया के (चन्द रोज़ा) फायदे हैं फिर तो आखिर हमारी ही तरफ लौट कर आना है तब उनके कुफ़र की सज़ा में हम उनको सख्त अज़ाब के मज़े चखाएँगे

ۚ وَآتِلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۚ يُقَوْمُ ۚ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِي وَتَذَكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا ۚ أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ۚ ثُمَّ أَقْضُوا ۚ إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونَ

और (ऐ रसूल) तुम उनके सामने नूह का हाल पढ़ दो जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा ऐ मेरी क्रौम अगर मेरा ठहरना और खुदा की आयतों का चर्चा करना तुम पर शाक़ व गिरा (बुरा) गुज़रता है तो मैं सिर्फ़ खुदा ही पर भरोसा रखता हूँ तो तुम और तुमहारे शरीक़ सब मिलकर अपना काम ठीक कर लो फिर तुम्हारी बात तुम (में से किसी) पर महज़ (छुपी) न रहे फिर (जो तुम्हारा जी चाहे) मेरे साथ कर गुज़रों और गुझे (दम मारने की भी) मोहलत न दो

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ۚ إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ

फिर भी अगर तुम ने (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ा तो मैंने तुम से कुछ मज़दूरी तो न माँगी थी-मेरी मज़दूरी तो सिर्फ़ खुदा ही पर है और (उसी की तरफ से) मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसके फरमाबरदार बन्दों में से हो जाऊँ

فَكَذَّبُوهُ فَانْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ ۚ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ
بِأَيَّتِنَا ۚ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُنْذَرِينَ

उस पर भी उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में (सवार) थे (उनको) नजात दी और उनको (अगलों का) जानशीन बनाया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो मारा

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا ۚ لِيُؤْمِنُوا ۚ بِمَا
كَذَّبُوا ۚ بِهِ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ

फिर ज़रा ग़ौर तो करो फिर हमने नूह के बाद और रसूलों को अपनी क्रौम के पास भेजा तो वह पैग़म्बर उनके पास वाजेए (खुले हुए) व रौशन मौजिजे लेकर आए इस पर भी जिस चीज़ को ये लोग पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान (न लाना था) न लाए हम यूँही हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर (गोया) खुद मोहर कर देते हैं

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ بِأَيَّتِنَا فَأَسْتَكْبَرُوا ۚ
وَكَانُوا ۚ قَوْمًا ۚ مُّجْرِمِينَ

फिर हमने इन पैग़म्बरों के बाद मूसा व हारून को अपनी निशानियाँ (मौजिजे) लेकर फिरऔन और उस (की क्रौम) के सरदारों के पास भेजा तो वह लोग अकड़ बैठे और ये लोग थे ही कुसूरवार

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا ۚ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ बात (मौजिजे) पहुँच गए तो कहने लगे कि ये तो यक़ीनी खुल्लम खुल्ला जादू है

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۚ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ

मूसा ने कहा क्या जब (दीन) तुम्हारे पास आया तो उसके बारे में कहते हो कि क्या ये जादू है और जादूगर लोग कभी कामयाब न होंगे

قَالُوا ۖ أَجِئْنَا لِنُلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ
وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ

वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) क्यों तुम हमारे पास उस वास्ते आए हो कि जिस दीन पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया उससे तुम हमें बहका दो और सारी ज़मीन में ही दोनों की बढ़ाई हो और ये लोग तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتُتُونِي بِكُلِّ سَحَرٍ عَلِيمٍ ۖ

और फिरऔन ने हुक्म दिया कि हमारे हुज़ूर में तमाम खिलाड़ी (वाक़िफ़कार) जादूगर को तो ले आओ

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا ۖ مَا أَنْتُمْ مُّلقُونَ

फिर जब जादूगर लोग (मैदान में) आ मौजूद हुए तो मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ फेंकना हो फेंको

فَلَمَّا أَلْقَوْا ۖ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ

फिर जब वह लोग (रस्सियों को साँप बनाकर) डाल चुके तू मूसा ने कहा जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो (वह तो सब) जादू है- इसमें तो शक़ ही नहीं कि खुदा उसे फौरन मिटियामेट कर देगा (क्योंकर) खुदा तो हरगिज़ मफ़सिदों (फ़साद करने वालों) का काम दुरुस्त नहीं होने देता

وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ

और खुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को ना गँवार हो

فَمَا ءَامَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ ۖ مِّن قَوْمِهِ ۖ عَلَىٰ خَوْفٍ ۖ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ هُمْ أَن
يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ ۖ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ ۖ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ

अलगरज़ मूसा पर उनकी क़ौम की नस्ल के चन्द आदमियों के सिवा फिरऔन और उसके सरदारों के इस ख़ौफ़ से कि उन पर कोई मुसीबत डाल दे कोई ईमान न लाया और इसमें शक़ नहीं कि फिरऔनरुए ज़मीन में बहुत बढ़ा चढ़ा था और इसमें शक़ नहीं कि वह यक़ीनन ज्यादाती करने वालों में से था

وَقَالَ مُوسَىٰ يُقَوْمُ إِن كُنْتُمْ ءَامَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا ۖ إِن كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ

और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम (सच्चे दिल से) खुदा पर ईमान ला चुके तो अगर तुम फरमाबरदार हो तो बस उसी पर भरोसा करो

فَقَالُوا ۖ عَلَىٰ اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً ۖ لِلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ

उस पर उन लोगों ने अर्ज की हमने तो खुदा ही पर भरोसा कर लिया है और दुआ की कि ऐ हमारे पालने वाले तू हमें ज़ालिम लोगों का (ज़रिया) इम्तिहान न बना

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

और अपनी रहमत से हमें इन काफ़िर लोगों (के नीचे) से नजात दे

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا ۚ وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

और हमने मूसा और उनके भाई (हारुन) के पास 'वही' भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के (रहने सहने के) लिए घर बना डालो और अपने अपने घरों ही को मस्जिदें करार दे लो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ों और मोमिनीन को (नजात का) खुशख़बरी दे दो

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ ءَاتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَئَهُ ۖ زِينَةً ۖ وَأَمْوَالًا ۖ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا ۖ حَتَّىٰ يَرَوْا ۖ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

और मूसा ने अर्ज की ऐ हमारे पालने वाले तूने फिरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में (बड़ी) आराइश और दौलत दे रखी है (क्या तूने ये सामान इस लिए अता किया है) ताकि ये लोग तेरे रास्तों से लोगों को बहकाएं परवरदिगार तू उनके माल (दौलत) को शारत (बरबाद) कर दे और उनके दिलों पर सख्ती कर (क्योंकि) जब तक ये लोग तकलीफ़ देह अज़ाब न देख लेंगे ईमान न लाएंगे

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ

(खुदा ने) फरमाया तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई तो तुम दोनों साबित कदम रहो और नादानों की राह पर न चलो

﴿ وَجُوزَنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ ﴾ ﴿ بَغِيًّا ﴾ ﴿ وَاعْدُوا ﴾ ﴿ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ ءَامَنْتُ أَنَّهُ ﴾ ﴿ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي ءَامَنْتُ بِهِ ﴾ ﴿ بَنُوآ ﴾ ﴿ إِسْرَءِيلَ وَأَنَا ﴾ ﴿ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴾

और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार कर दिया फिर फिरऔन और उसके लश्कर ने सरकशी की और शरारत से उनका पीछा किया-यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा कि जिस खुदा पर बनी इसराइल ईमान लाए हैं मैं भी उस पर ईमान लाता हूँ उससे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं फरमाबरदार बन्दों से हूँ

﴿ ءَالَنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴾

अब (मरने) के वक्त रूठमान लाता है हालाँकि इससे पहले तो नाफ़रमानी कर चुका और तू तो फ़सादियों में से था

﴿ فَالْيَوْمَ نُنَجِّكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ ءَايَةً ﴾ ﴿ ؟ ﴾ ﴿ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ ءَايَتِنَا لَغَفُلُونَ ﴾

तो हम आज तेरी रूह को तो नहीं (मगर) तेरे बदन को (तह नशीन होने से) बचाएँगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए इबरत का (बाइस) हो और इसमें तो शक़ नहीं कि तेरे लोग हमारी निशानियों से यक़ीनन बेख़बर हैं

﴿ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبُوءًا صِدْقٍ ﴾ ﴿ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا ﴾ ﴿ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ﴾ ﴿ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا ﴾ ﴿ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴾

और हमने बनी इसराइल को (मालिक शाम में) बहुत अच्छी जगह बसाया और उन्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दी तो उन लोगों के पास जब तक इल्म (न) आ चुका उन लोगों ने एख़्तेलाफ़ नहीं किया इसमें तो शक़ ही नहीं जिन बातों में ये (दुनिया में) बाहम झगड़े रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार इसमें फैसला कर देगा

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ ۚ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

पस जो कुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है अगर उसके बारे में तुम को कुछ शक हो तो जो लोग तुम से पहले से किताब (खुदा) पढ़ा करते हैं उन से पूछ के देखो तुम्हारे पास यकीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ किताब आ चुकी तो तू न हरगिज़ शक करने वालों से होना

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُ مِنَ الْخُسِرِينَ

न उन लोगों से होना जिन्होंने खुदा की आयतों को झुठलाया (वरना) तुम भी घाटा उठाने वालों से हो जाओगे

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि जिन लोगों के बारे में तुम्हारे परवरदिगार को बातें पूरी उतर चुकी हैं (कि ये मुस्तहके अज़ाब हैं)

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا ۚ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

वह लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब देख (न) लेंगे ईमान न लाएंगे अगरचे इनके सामने सारी (खुदाई के) मौजिज़े आ मौजूद हो

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ ءَامَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمُنُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا ءَامَنُوا ۚ كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۚ

कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान कुबूल करती तो उसको उसका ईमान फायदे मन्द होता हाँ यूनूस की कौम जब (अज़ाब देख कर) ईमान लाई तो हमने दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई का अज़ाब दफा कर दिया और हमने उन्हें एक खास वक्त तक चैन करने दिया

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَءَامَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۚ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

और (ऐ पैग़म्बर) अगर तेरा परवरदिगार चाहता तो जितने लोग रुए ज़मीन पर हैं सबके सब ईमान ले आते तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो ताकि सबके सब ईमानदार हो जाएँ हालाँकि किसी शख्स को ये एख्तेयार नहीं

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

कि बगैर खुदा की इजाज़त ईमान ले आए और जो लोग (उसूले दीन में) अक़ल से काम नहीं लेते उन्हीं लोगों पर खुदा (कुफ़र) की गन्दगी डाल देता है

قُلْ أَنْظَرُوا ۚ مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي أَلْءَايَتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ ۚ لَا يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) तुम कहा दो कि ज़रा देखों तो सही कि आसमानों और ज़मीन में (खुदा की निशानियाँ क्या) क्या कुछ हैं (मगर सच तो ये है) और जो लोग ईमान नहीं कुबूल करते उनको हमारी निशानियाँ और डरावे कुछ भी मुफीद नहीं

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا ۚ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

तो ये लोग भी उन्हें सज़ाओं के मुन्तिज़र (इन्तज़ार में) हैं जो उनसे क़बल (पहले) वालों पर गुज़र चुकी हैं (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अच्छा तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ यक़ीनन इन्तज़ार करता हूँ

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ ۚ كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِينَ

फिर (नुज़ूले अज़ाब के वक़्त) हम अपने रसूलों को और जो लोग ईमान लाए उनको (अज़ाब से) तलूउ बचा लेते हैं यूँ ही हम पर लाज़िम है कि हम ईमान लाने वालों को भी बचा लें

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ ۖ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर तुम लोग मेरे दीन के बारे में शक़ में पड़े हो तो (मैं भी तुमसे साफ़ कहें देता हूँ) खुदा के सिवा तुम भी जिन लोगों की परसतिश करते हो मैं तो उनकी परसतिश नहीं करने का मगर (हाँ) मैं उस खुदा की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (अपनी कुदरत से दुनिया से) उठा लेगा और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मोमिन हूँ

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

और (मुझे) ये भी (हुक्म है) कि (बातिल) से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ़ कायम रख और मुशरैकीन से हरगिज़ न होना

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ
الْظَّالِمِينَ

और खुदा को छोड़ ऐसी चीज़ को पुकारना जो न तुझे नफा ही पहुँचा सकती हैं न नुकसान ही पहुँचा सकती है तो अगर तुमने (कहीं ऐसा) किया तो उस वक्त तुम भी ज़ालिमों में (शुमार) होगें

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ ۖ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

और (याद रखो कि) अगर खुदा की तरफ से तुम्हें कोई बुराई छू भी गई तो फिर उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं होगा और अगर तुम्हारे साथ भलाई का इरादा करे तो फिर उसके फज़ल व करम का लपेटने वाला भी कोई नहीं वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे फायदा पहुँचाएँ और वह बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

قُلْ يَأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ ۚ
وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا ۚ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ लोगों तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक़ (कुरान) आ चुका फिर जो शख्स सीधी राह पर चलेगा तो वह सिर्फ अपने ही दम के लिए हिदायत एख्तेयार करेगा और जो गुमराही एख्तेयार करेगा वह तो भटक कर कुछ अपना ही खोएगा और मैं कुछ तुम्हारा ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَأَصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारे पास जो 'वही' भेजी जाती है तुम बस उसी की पैरवी करो और सब्र करो यहाँ तक कि खुदा तुम्हारे और काफिरों के दरमियान फैसला फरमाए और वह तो तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है